باسمہٖ تعالیٰ

مکرمی جناب ____ بسم اللہ الرحمن الرحیم ____ السلام علیکم

बाबा वली शिकोह, अल्लामा अदीब, शोहरत अदीब, अल्लामा सोज़, मिस्बाहुल मुराद, मुफ्ती इसराफील दीगर शोरा-ए-किराम के कलाम, नात, मनक़बत, सलाम का मजमूआ

दयारे हुज़ूर में

मदार बुक डिपो

मकनपुर शरीफ, ज़िला कानपुर नगर

Front Page Created By - @MadaariMedia

प्यारे हुज़ूर में

पीरे तरीक़त

मुफ़्ती [illegible]

शैखुल हदीस जामिआ मदारुल उलूम
मदीनतुल औलिया, मकनपुर शरीफ़

मुरत्तिब

मुहम्मद नस्तईन ख़ाँ नस्तौली कन्नौज
शम्स तबरेज़ मदारी

नाशिर

मदार बुक डिपो

मकनपुर शरीफ़, ज़िला कानपुर नगर

सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम

प्यारे हुज़ूर में

हस्बे मंशा

पीरे तरीक़त मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी

शैखुल हदीस जामिआ मदारुल उलूम

मदीनतुल औलिया, मकनपुर शरीफ़

— मुरत्तिब —

मुहम्मद नस्तईन ख़ाँ नस्तौली कन्नौज

शम्स तबरेज़ मदारी

— नाशिर —

मदार बुक डिपो

मकनपुर शरीफ़, जिला कानपुर नगर यू०पी०

हम्द बारी तआला

अल्लामा अदीब मकनपुरी

हाजते आहे नीम शब और न शर्तें अहलियत
चाहे जिसे नवाज़ दे तेरा वफ़ूरे मरहमत

मैं कि फ़कत नियाज़मन्द तू कि है एक बेनियाज़
झुक के तुझे लुभाए क्या मेरा सरे उबूदियत

आया जो लब पे तेरा नाम तार से झंझना उठे
तुझसे रबाबे क़ल्ब को कोई तो है मुनासबत

होशो हवास सब हुए राह के पेचोख़म में गुम
आ गई क्या क़रीबतर मंज़िले दर को मारफ़त

काश गुदाज़े क़ल्ब से मांग सकूँ में वह दुआ
जिसके लिए है मुन्तज़िर तेरा दरे क़ुबूलियत

तेरे करम से जो मिला मंज़िले इश्क़ में 'अदीब'
शरहो बयान में नहीं आता वह कैफ़े कैफ़ियत

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी
तजल्लियाते सरमदी यहाँ अयाँ गली गली
न ढूंढ बनके अजनबी दरे रसूले हाशमी
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

जो ज़र्रे गर्दे राह हैं मिसाले मेहरो माह हैं
यह जलवे बेपनाह हैं, हैं जिबरईल हैरती
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

समाँ बक़ीए पाक का यह है मज़ारे आयशा
इधर हसन सा महलक़ा उधर नबी की लाडली
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

यहीं है सिद्क़ जलवागर, यहीं अदालते उमर
यहीं ग़नी सा अहलेज़र, यहीं है फ़क़्रे हैदरी
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

यह डालियाँ खजूर की हों जैसे नख़ल तूर की
शुआएं जिनके नूर की बिखेरती हैं रोशनी
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

ये मस्जिदे रसूल है यही दरे क़ुबूल है
वह हुजरए बुतूल है जो खुल्द है 'अदीब' की
यह है मदीनतुन्नबी यह है मदीनतुन्नबी

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

निज़ामे हश्र ज़ेरे इख़्तियारे मुस्तफ़ा होगा
यह होगा हुक्म ऐ महबूब जो मांगो अता होगा

शबे मेराज जो पेशे निगाहे मुस्तफ़ा होगा
जहन्नुम का वह ख़ित्ता रश्के जन्नत बन गया होगा

वह आलम हाए वह आलम जहन्नुम जाने वालों का
शफ़ीए हश्र का मुड़ मुड़ के रस्ता देखता होगा

तमन्ना सब की थी लेकिन यह मंशाए मशीअत था
अबू अय्यूब अन्सारी का घर रहमत कदा होगा

सितारों की ज़मीं पर जाने वालो सर के बल जाना
सितारों की जबीं पर मुस्तफ़ा का नक़्शे पा होगा

'अदीब' एहसास यह लेता है दिल में चुटकियाँ पैहम
मेरी फ़रदे अमल सरकार देखेंगे तो क्या होगा

नात पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

फ़ुग़ाने इश्क़े नबी बे असर नहीं होती
अज़ाँ बिलाल न दें तो सहर नहीं होती

यह अपने नूर का मरकज़ तलाश करते हैं
फ़ुज़ूल गर्दिशे शामो सहर नहीं होती

ज़माने भर में मदीने की वादियों के सिवा
कहीं तशफ़्फ़ियें ज़ौके नज़र नहीं होती

लबे हुज़ूर से निकली हुई जो बात न हो
ज़माना लाख कहे मोतबर नहीं होती

बता रही है अबू जहल की यह बे बसरी
तजल्लियों की अमीं हर नज़र नहीं होती

मेरे हुज़ूर की शाने करम का क्या कहना
वह भीख देते हैं लेकिन ख़बर नहीं होती

'अदीब' यह भी कमाले अदब शनासी है
लहू लहू है जिगर आँख तर नहीं होती

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

न कौसर न जन्नत का दर ढूंढती है
मुहम्मद को मेरी नज़र ढूंढती है

सुकूँ चाहती है तो चश्मे मलक भी
कफ़े पाए ख़ैरूल बशर ढूंढती है

ख़बर देखना क्या मदीने से आए
दुआ आज अपना असर ढूंढती है

तमन्नाए दिल की जसारत को देखो
हुज़ूरी में जाए गुज़र ढूंढती है

गुलामीए शाहे दोआलम जहाँ में
बिलाले हज़ीं का जिगर ढूंढती है

बढ़ाने को तौकीर इंसानियत की
रिसालत लिबासे बशर ढूंढती है

'अदीबे' ख़ताकार को रोज़े महशर
शफ़ीउल वरा की नज़र ढूंढती है

नाते पाक

हस्सानुल हिन्द अल्लामा अदीब माकनपुरी

ज़ाते सरकार जलवा नुमा हो गई
एक नये दौर की इब्तिदा हो गई

बूलहब ने न देखा जमाले नबी
कम निगाही की भी इन्तहा हो गई

जब भी नामे मुहम्मद ज़बाँ से लिया
क़ल्ब के आईने पर जिला हो गई

नकहते जुल्फ़े सरकार आने लगी
मेरी फ़रयाद शायद रसा हो गई

छोड़कर मुझको अरज़े दयारे नबी
ज़िन्दगी काटना एक बला हो गई

यादे तैबा भी दामन बचाने लगी
भूल मुझसे खुदा जाने क्या हो गई

हम तो उड़कर मदीने पहुँचते 'अदीब'
क्या करें ज़िन्दगी बे वफ़ा हो गई

नाते पाक

फूलों को महक कलियों को रंगत न मिलेगी
जब तक चमने तैबा की निस्बत न मिलेगी

तसकीन की दिल को मेरे दौलत न मिलेगी
जब तक दरे सरकार की कुरबत न मिलेगी

ख़ाली न रहे कोई नफ़स ज़िक्रे नबी से
मौत आई तो फिर इतनी भी मोहलत न मिलेगी

ऐ अज़मते सरकार के मुंकिर यह समझ ले
सरकार न चाहेंगे तो जन्नत न मिलेगी

कहती थी यह बेदारिए तक़दीर अली की
सो जाओ कि फिर यह शबे हिजरत न मिलेगी

सरदार उमर समझें बिलाले हबशी को
दुनिया में गुलामों को यह इज़्ज़त न मिलेगी

वह ज़ुल्म से बाज़ आ गये सदके में नबी के
जो कहते थे मज़दूर को उजरत न मिलेगी

अल्लामा अदीब मकनपुरी

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

हम हैं यह लौ लगाए दयारे हुज़ूर में
आए तो मौत आए दयारे हुज़ूर में

मालिक अगर बुलाए दयारे हुज़ूर में
सर को क़दम बनाए दयारे हुज़ूर में

कांटों को भी गुलों की सिफ़त इसलिए मिली
क्यों कोई दुख उठाये दयारे रसूल में

ऐ हुस्ने कायनात फ़िदा तुझपे क्या करें
हम दिल तो छोड़ आए दयारे रसूल में

मेहरे जलाल वादिए मक्का में शोलारेज़
और चाँद मुस्कुराए दयारे रसूल में

सौग़ात बहरे नज़्र ज़रूरी है ऐ 'अदीब'
दिल तोड़ ले तो जाए दयारे हुज़ूर में

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

मुख़्तारे निज़ामे कौनो मकाँ है ज़ात मदीने वाले की
हर दिन है मदीने वाले का हर रात मदीने वाले की

आहों का धुआँ, घंघोर घटा, अश्के हिजराँ, रिमझिम बरखा
फिर याद दिलाने आई है बरसात मदीने वाले की

जो दे भी सके दिलवा भी सके कोई भी नहीं ऐसा लेकिन
एक ज़ात है काबा वाले की एक ज़ात मदीने वाले की

कौनेन के चप्पे चप्पे पर हैं उनके गुलामों के मसकन
बटती है जहाँ में हर दर से ख़ैरात मदीने वाले की

क़िस्मत में हमारी ऐ मालिक तू लिखदे मदीने की गलियाँ
हम बनके भिखारी माँगेंगे ख़ैरात मदीने वाले की

आसी है 'अदीबे' ज़ार तो क्या महशर का नहीं उसको खटका
बख़शिश के लिए बस काफी है यह नात मदीने वाले की

नाते पाक

अल्लामा अदीब मकनपुरी

मक्की मदनी हाशमी–ओ–मुत्तलबी के
चरचे हैं जहाँ में तेरी आली नसबी के

बेमिस्ल हैं अलफ़ाज़ अहादीसे नबी के
ऐ इल्म क़दम चूम ले उम्मी लक़बी के

सिद्दीक़ो उमर हों कि वह उस्मानो अली हों
सैय्यारए रौशन हैं मेरी तीराशबी के

सरकारे मदीना तो हैं सरकारे मदीना
बेमिस्ल हैं असहाब रसूले अरबी के

मुज़ज़म्मिलो मुद्दस्सिरो यासीं कहीं ताहा
कुर्बान दिलो जान तेरी खुश लक़बी के

दरबार में आक़ा के कभी उफ़ भी न करना
इमकान हज़ारों हैं वहाँ बे अदबी के

चमका सरे फ़ाराँ पे जो ईमान का सूरज
बेनूर हुए सारे दिये बू लहबी के

क्या नात कहे इसको 'अदीब' अपनी ज़बाँ से
यह शेर हैं सरकार मेरे ज़हने ग़बी के

नात पाक

इश्क़ में डूब के एक नाते पयम्बर लिख दो
अपने हाथों ही से खुद अपना मुक़द्दर लिख दो

रोशनाई जो तवक्कुल की मयस्सर हो तुम्हें
लेके गुरबत का क़लम शाने अबूज़र लिख दो

दश्ते बतहा के हर एक ख़ार को समझो गुलशन
ख़ाके तैबा को भी तुम अर्श से बेहतर लिख दो

अपना जैसा मेरे सरकार को कहने वालो
अपने वालिद को ज़रा अपने बराबर लिख दो

हश्र में छू नहीं पायेगी तुम्हें तशना लबी
अपने होटों पे फ़क़त साक़िए कौसर लिख दो

मैं यह समझूंगा मुझे मिल गई लौहे महफ़ूज़
नाम आक़ा का मेरे, तख़तिए दिल पर लिख दो

जिस ने चूमे थे तुम्हारे लबे नूरी आक़ा
मेरे होटों के भी हिस्से में वह पत्थर लिख दो

चाहते हो जो दो आलम में बुलन्दी 'मिस्बाह'
लौहे किरदार पे तुम क़िस्सए हैदर लिख दो

अल्लामा मिस्बाहुल हुदाद मकनपुरी

नाते पाक

अल्लामा मिस्बाहुल मुराद मकनपुरी

बुझा चराग़ हूँ तू मुझको रोशनी दे दे
मेरे खुदा मुझे इश्के मुहम्मदी दे दे

ग़मे रसूल है सरमायए खुशी यारब
हमारे दिल को यह सरमायए खुशी दे दे

वह जिसपे आए तरस रहमते दोआलम को
मेरी हयात को तू ऐसी बेकसी दे दे

ज़माना क्यों न गुलामी पे उसकी नाज़ करे
ख़िताब मौला का जिसको मेरा नबी दे दे

नबी के नाम पे मांगे कोई भिखारी अगर
न क्यों ख़ज़ानों की कुँजी उसे ग़नी दे दे

हलाकतों से बचा ले मुझे तू ऐ मालिक
गुरूर छीन ले और जौहरे खुदी दे दे

नबी की आल में पैदा किया है शुक्र तेरा
मगर दुआ है कि किरदारे फ़ातमी दे दे

है चाहिए नहीं 'मिस्बाह' को शहंशाही
उसे नबी के गुलामों की नौकरी दे दे

नाते पाक

अल्लामा मिस्बाहुल मुराद मकनपुरी

उसको किताबे ज़ीस्त का लोगो हर एक बाब सुनहरा है
जिसके मुक़द्दर की तख़्ती पर शहरे मदीना लिक्खा है

पेट पे अपने बांधे पत्थर और भूखों को खिलाता है
हैरत है दुनिया वालों को यह किस शान का दाता है

मैं उसका हूँ जिसके इशारे पर सूरज और चाँद चले
होश में ऐ गर्दिशे दौरां तूने मुझे क्या समझा है

हमको बताती है यह बिलाले हबशी की ताबिन्दा हयात
दोनों जहाँ हैं उसपे निछावर जो भी नबी का शैदा है

तायफ़ के बाज़ार से जाकर पूछो वह बतलायेगा
मेरा नबी ऐसा सावन है जो रहमत बरसाता है

देखो ज़रा यह कौन गया है सूए फ़लक मेराज की रात
फ़र्शे ज़मीं से अर्शे बरीं तक चारों सम्त उजाला है

क़ब्र में मेरे सामने मेरी उम्मीदों का हासिल था
पूछ रहे थे मुझसे फ़रिश्ते देख यह किसका चेहरा है

हश्र की तपती धूप का हमको क्या ख़तरा 'मिस्बाह वली'
जब उनके दामाने करम का सर पे हमारे साया है

नाते पाक

मुफ़्ती मुहम्मद इसराफ़ील "साक़ी" मकनपुरी

जमाले रूए मुहम्मद की रोशनी लेकर
सबा मदीने से आई है ज़िन्दगी लेकर

कमाले लुत्फ़े इलाही मेरे नबी लेकर
चले हैं खुल्द गुनहगार उम्मती लेकर

अरे यह अरज़े मदीना है पांव होश में रख
यहाँ पे आते हैं जिब्रील भी वही लेकर

न जिसमें हुब्बे नबी का खुमार शामिल हो
मैं क्या करूँगा भला ऐसी ज़िन्दगी लेकर

मुझे गुलामिए आक़ा में जो मुक़ाम मिला
कहाँ तू पायेगा दुनिया की सरवरी लेकर

मुसर्रतों ने मेरे बढ़ के पांव चूम लिये
ग़मे नबी को चला जब खुशी खुशी लेकर

छुपा लिया है निगाहों में मैंने हुस्ने अज़ल
हसीन गुम्बदे ख़ज़रा की सादगी लेकर

लगा लिया है गले मौत को भी यह सुनकर
हुज़ूर कब्र में आयेंगे रोशनी लेकर

उठी निगाहे करम प्यास बुझ गई 'साक़ी'
दरे नबी से गया कौन तशनगी लेकर

नाते पाक

मुफ़्ती मुहम्मद इसराफ़ील "साक़ी" मकनपुरी

नबी को ज़िक्र करूँ तो ज़बान ख़ुशबू दे
जहाँ पे ज़िक्रे नबी हो मकान ख़ुशबू दे

नसीब हो जो पसीना शहे दोआलम का
तो एक फ़र्द नहीं ख़ानदान ख़ुशबू दे

बिखेर दें जो फ़ज़ाओं में अपनी ज़ुल्फ़ों को
ज़मीन झूम उठे आसमान ख़ुशबू दे

शमीमे इश्क़े मुहम्मद की इत्र बेज़ी से
बिलाल जैसी अगर हो अज़ान ख़ुशबू दे

जो तेरा कुर्ब हो हासिल हयात बन जाए
तेरे फ़िराक़ में निकले तो जान ख़ुशबू दे

तू मुस्कुरा दे तो सारी फ़ज़ा महक उट्ठे
तू बोल दे तो यह सारा जहान ख़ुशबू दे

शरफ़ हुज़ूरिए तैबा का भी अता कर दे
यह और हुस्ने करम मुझपे ऐ ख़ुदा कर दे

जमाले रूए नबी से सदा मुनव्वर हो
इलाही दिल को मेरे ऐसा आईना कर दे

उसे ज़माना मिटायेगा क्या सितम करके
मदीने वाला जिसे ज़िन्दगी अता कर दे

बताओ कौन सख़ी है मेरे नबी के सिवा
जो माँगने से सिवा दे बुला बुलाकर दे

फ़ुज़ूल मुफ़्त की चारागरी भी क्या करना
ग़मे नबी है कोई इसकी क्या दवा कर दे

उड़ा के लाती है बूए रसूल तैबा से
कभी तो रूख़ मेरे घर का भी ऐ सबा कर दे

तेरी निगाह कहाँ जामे जम कहाँ 'साक़ी'
तू एक निगाह से इस रिन्द का भला कर दे

मुफ़्ती मुहम्मद इसराफ़ील "साक़ी" मकनपुरी

नाते पाक

सैयद क़मर आदिल 'सोज़' मकनपुरी

यूँ आम ज़माने में करो प्यार की बातें
बच्चों को सिखाओ मेरे सरकार की बातें

कुछ इसके अलावा मुझे अच्छा नहीं लगता
दिल कहता है करते रहो सरकार की बातें

आए हैं उमर पेशे नबी सर को झुकाये
अब क़त्ल की बातें हैं न तलवार की बातें

इन चाँद सितारों की ज़िया माँद है आक़ा
हैं इतनी मुनव्वर तेरे किरदार की बातें

अल्लाह की रहमत की वहाँ होती है बारिश
होती हैं जहाँ अहमदे मुख़्तार की बातें

ईमान के फूलों से भरा आपने दामन
हम भूल गए कुफ़्र के हर ख़ार की बातें

हो इतना करम 'सोज़' पे दरबारे नबी तक
पहुँचा दे सबा तू दिले बीमार की बातें

नाते पाक

कौन यहाँ है किसका साथी यह मतलब की दुनिया है
जो दुखियों के आँसू पोछे वह तो मदीने वाला है

ऐसा करम फरमाने वाला कोई बताओ देखा है
बाँधे है अपने पेट पे पत्थर और दुनिया का दाता है

इन्ना आतैना कलकौसर क़ुरआँ में फ़रमाया है
ख़ालिके आज़म ने ऐ आक़ा आपको सब कुछ बख़्शा है

नूरे मुजस्सम के क़दमों को प्यार से तूने चूमा है
अरज़े मदीना अर्श का हमसर तेरा ज़र्रा ज़र्रा है

दर दर ठोकर खाने वालो इस दरजा बे आस न हो
आओ मांगें भीख उसी से जो रहमत का दरिया है

अपनी तो बद आमाली से बख़्शिश की उम्मीद नहीं
महशर में ऐ शाफ़ए महशर तेरा एक सहारा है

दोनों जहाँ की भीख मिली है तेरी ही ताबानी से
तुझमें मकीं है नूरे मुजस्सम ख़ज़रा तेरा क्या कहना है

'सोज़' चलो दरबारे मदीना क्या है भरोसा जीने का
जाने कब होता है सवेरा दुनिया रैन बसेरा है

सैयद क़मर आदिल 'सोज़' मकनपुरी

नाते पाक

सैयद क़मर आदिल 'सोज़' मकनपुरी

हर जुल्म हुआ बर्बाद कि आए मेरे प्यारे नबी
अब कोई न हो नाशाद कि आए मेरे प्यारे नबी

रहमत के बादल छाये हैं दुनिया की सूखी धरती पर
गुलशन में बहारे आई हैं सब फूले फले फल फूल शजर
मालिक ने सुनी फ़रियाद कि आए मेरे प्यारे नबी

सैयाद के पिंजड़ों के अन्दर दुख दर्द भरी थीं आवाज़ें
ज़ालिम दुनिया ने पर काटे और छीन लीं जिनकी परवाज़ें
वह पंछी हुए आज़ाद कि आए मेरे प्यारे नबी

बिखरे हैं सदाक़त के जलवे फ़ारूक़ीयत की बस्ती में
है नूरे सख़ावत नूरे विला इंसानीयत की बस्ती में
हर शख़्स हुआ आबाद कि आए मेरे प्यारे नबी

अब कुफ़्र की दुनिया सूनी है सन्नाटे हैं बुतख़ानों में
हर सम्त है एक शोरे मातम अब बिदअत के ऐवानों में
बातिल की हिली बुनियाद कि आए मेरे प्यारे नबी

ऐ 'सोज़' नहीं मज़लूमों को अब जुल्मो तशद्दुद का ख़तरा
आमद से उनकी खुश होकर कहता था यतीम इक इक बच्चा
अब होगी मेरी इमदाद कि आए मेरे प्यारे नबी

नाते पाक

किये हैं नूर से रोशन जहाँ पत्थर मदीने के
हैं लगते मिस्ले माहो कहकशाँ पत्थर मदीने के

हर एक जानिब से आती है सदा अल्लाहु अकबर की
यह लगता है कि देते हैं अज़ाँ पत्थर मदीने के

करूँगा हर घड़ी बातें मैं उनसे अपने आक़ा की
अगर बन जाएं मेरे हम ज़बाँ पत्थर मदीने के

अगर हो तेरे दिल में इश्क़ की मेराज का जज़्बा
तो झुककर चूम ले ऐ आसमाँ पत्थर मदीने के

अगर मिल जाएं बोसे को तो यह उनकी नवाज़िश है
कहाँ मेरे लबे आसी कहाँ पत्थर मदीने के

छुपा लूँ अपनी आँखों में कि दिल में दूँ जगह उनको
बता ऐ आरज़ू रक्खूँ कहाँ पत्थर मदीने के

धड़क उटठेंगे करबे ग़म से 'शोहरत' यह भरोसा है
सुनेंगे जब हमारी दास्ताँ पत्थर मदीने के

अल्लामा सैयद शोहरत अदीब मकनपुरी

नाते पाक

अल्लामा सैयद शोहरत अदीब मकनपुरी

हर एक ज़र्रा चमकता है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए
अंधेरों में उजाला है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

फ़लक पर कोई कहता है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए
ज़मीं पर भी यह चरचा है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

फ़ज़ाएं मुस्कुराती हैं हवाएं गुनगुनाती हैं
कि मौसम महका महका है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

न कैसे फिर मुबारकबाद दे ऐ आमना तुझको
बहुत खुश आज काबा है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

हुकूमत क़ैसरो कसरा की है लरज़ीदा-लरज़ीदा
हर एक बुत सर बसजदा है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

ज़माने की गुलामी से मफ़र पाई गुलामों ने
नहीं अब डर किसी का है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

नहीं जिनका सहारा था कोई दुनिया में ऐ 'शोहरत'
मिला उनको सहारा है मुहम्मद मुस्तफ़ा आए

नाते पाक

अल्लामा सैयद शोहरत अदीब मकनपुरी

वश्शम्स कहे ख़ालिक सूरत हो तो ऐसी हो
कुरआन गवाही दे सीरत हो तो ऐसी हो

एक पैकरे ख़ाकी है कौसेन की मंज़िल में
जिब्रील को हैरत है रिफ़अत हो तो ऐसी हो

है साया फ़िगन सब पर दामाने करम उनका
महरूम नहीं कोई रहमत हो तो ऐसी हो

इरशाद जो फ़रमाया वह करके भी दिखलाया
हैं क़ौलो अमल यकसाँ वहदत हो तो ऐसी हो

तैबा की ज़मीं तुझको आका ने नवाज़ा है
अज़मत हो तो ऐसी हो किस्मत हो तो ऐसी हो

सब कुछ है उन्हें मुमकिन, हैं मालिके कुल लेकिन
बाँधे हुए पत्थर हैं गुरबत हो तो ऐसी हो

सब तुझको समझते हैं मद्दाहे नबी 'शोहरत'
आका के गुलामों में शोहरत हो तो ऐसी हो

नाते पाक

अल्लामा सैयद शोहरत अदीब मकनपुरी

करके मेरे नबी का दीदार चाँद सूरज
किस दरजा हो गये हैं ज़ौबार चाँद सूरज

अनवारे मुस्तफ़ा की ख़ैरात जब से पाई
रोशन किये हैं सारा संसार चाँद सूरज

भूलेंगे मेरे आक़ा हरगिज़ न फ़र्ज़ अपना
हाथों पे चाहे रख दें कुफ़्फ़ार चाँद सूरज

गर्दिश में रह के शहरे तैबा की हर गली का
करते हैं चुपके चुपके दीदार चाँद सूरज

रोशन की मुस्तफ़ा ने यूँ शम्मए उख़ूवत
लगने लगे महाजिर अन्सार चाँद सूरज

सैयाहे लामकाँ के तलवों का अक्स पाकर
कहलाए रोशनी के शहकार चाँद सूरज

तारीख़ के फ़लक पर बनकर चमक रहे हैं
असहाबे मुस्तफ़ा के किरदार चाँद सूरज

मुख़्तारे कुल का पायें अदना जो एक इशारा
बदलें निज़ाम अपना सौबार चाँद सूरज

अशकों को अपने लेकर चल उनके दर पे 'शोहरत'
कर देंगे अम्बिया के सरदार चाँद सूरज

नाते पाक

अल्लामा सैयद शोहरत अदीब मकनपुरी

इतनी अज़मत वाला कहाँ है और किसी का नाम
अर्शे बरीं पे लिक्खा हुआ है मेरे नबी का नाम

उनका ज़िक्रे पाक है मेरे दर्दे दिल का दरमाँ
उनके ग़म को दे रक्खा है मैंने खुशी का नाम

खुद भूखा रहकर भूखों की जिसने भूख मिटाई
याद रहेगा सारे जहाँ को ऐसे सख़ी का नाम

मेरे नबी की उंगलियों से फूट पड़े जब चशमे
भूल गए हैं सारे सहाबा तशना लबी का नाम

आता है फेहरिस्ते सहाबा में सबसे पहले
सिद्दीको फ़ारूको उसमाँ और अली का नाम

उनके दर का ज़र्रा ज़र्रा है रश्के कौनेन
जन्नत भी है फ़ख़्र से लेती उनकी गली का नाम

हर एक की किस्मत में कहाँ थी यह मेराज
आक़ा के बिस्तर पे लिखा था सिर्फ़ अली का नाम

फ़ैज़ का दरिया

शैखुल हिन्द सैयदना ज़ुलफ़िक़ार अली क़मर मकनपुरी

तमाम उम्र की वह राहतों पे भारी हैं
नबी की याद में जो साअतें गुज़ारी हैं

उदासियां दिले ग़रीब में जो तारी हैं
ख़बर लो आक़ा कि हम ज़िन्दगी से आरी हैं

दरे हुज़ूर पे आते हैं हाथ फैलाये
करम की भीख अता हो कि हम भिखारी हैं

हमारी सम्त भी सरकार एक निगाहे करम
कि हम से रूठ गई किस्मतें हमारी हैं

ग़रीब दिल की कोई धड़कनों को क्या जाने
यह धड़कनें तो हबीबे खुदा को प्यारी हैं

कभी तो सुब्हे मदीना नसीब होगी हमें
सियाह रातें इसी आस में गुज़ारी हैं

जहाँ कहीं से है मिलता उन्हीं का सदक़ा है
उन्हीं के फ़ैज़ के दरिया जहाँ में जारी हैं

बहारे खुल्द भी उसकी नज़र में है लेकिन
तुम्हारे देस की गलियाँ 'क़मर' को प्यारी हैं

शैखुल हिन्द सैयदना जुलफ़िक़ार अली क़मर मकनपुरी

शिकस्ता दिलों के मददगार आए
वह सरकार आए वह सरकार आए

असीराने उलफ़त दरे मुस्तफ़ा तक
गिरफ़्तार पहुँचे गिरफ़्तार आए

लगाने लगे लोग इस दिल की क़ीमत
दिखा के जो तैबा का बाज़ार आए

उभरने लगी रूह में ताज़गी सी
नज़र जो मदीने के आसार आए

न आँसू बहाओ मुसीबत के मारो
वह आए ग़रीबों के ग़मख़्वार आए

जहाँ से जहाँ तक गई हैं निगाहें
नज़र सब उन्हीं के तलबगार आए

न क्यों जगमगाए 'क़मर' उसका सीना
मदीने से लेकर जो अनवार आए

नाते पाक

शैख़ुल हिन्द सैयदना ज़ुल्फ़िक़ार अली क़मर मकनपुरी

दूरिए तैबा का ग़म और यह मुनाजात की रात
यह बरसते हुए आँसू हैं कि बरसात की रात

तेरी ख़ातिर ग़मे तैबा में तड़पने वाले
माहो अन्जुम से सजा ली गई सौग़ात की रात

उसके रूतबे की बुलन्दी को बशर को क्या जाने
आसमानों का सफ़र जिसने किया रात की रात

आपके नूर से दुनिया ने उजाले पाये
आप आए तो सहर बन गई ज़ुलमात की रात

एक महजूरे मदीना की तवाज़ोअ के लिए
अपने गेसू है बिखेरे हुए हालात की रात

दोस्तो ! आक़ा की गलियो में जो रह के गुज़रे
है वही अहले तलब के लिए नग़मात की रात

गुम्बदे ख़ज़रा के जलवे है तसव्वुर में 'कमर'
नूर ही नूर है अब मेरे ख़यालात की रात

नाते पाक

तमन्ना मकनपुरी

मिदहत शहे कौनेन की आसान नहीं है
आख़िर यह ज़बाँ है कोई कुरआन नहीं है

अपना सा बशर जो मेरे आक़ा को बताए
इंसान की नज़रों में वह इंसान नहीं है

यह सच है कि मेराज के दूल्हा के अलावा
कोई भी नबी अर्श का मेहमान नहीं है

है साया फ़िगन सर पे मेरे दामने आक़ा
महशर में भी दिल मेरा परेशान नहीं है

सरकार मुझे अपना बता दें सरे महशर
बस इसके सिवा कोई भी अरमान नहीं है

सब रेहने करम उनके हैं बतलाओ 'तमन्ना'
किस पर मेरे सरकार का एहसान नहीं है

नाते पाक

सैयद मुर्तज़ा हुसैन रहबर मकनपुरी

यह हैं जो आरज़ू-ओ-हसरत-ओ-अरमान आंखों में
फ़क़त दीदारे तैबा तक हैं सब मेहमान आंखों में

नहीं सैलाब थमता शहरे तैबा में किसी पल को
उठा रक्खा है अश्कों ने बड़ा तूफ़ान आंखों में

ख़ुदारा दीजिए इज़्ने हुज़ूरी या रसूलल्लाह
बसा लूँ मैं मदीना अपनी इन वीरान आंखों में

नज़र के सामने हो रूए अनवर काश आक़ा का
हमारे जिस्म से जब खिंच के आये जान आंखों में

हुए आक़ा जो मेहमाँ बरकतों का क्या ठिकाना था
है अब भी हज़रते जाबिर का दस्तरख़्वान आंखों में

इन आंखों को दिखादे अब तो यारब गुम्बदे ख़ज़रा
निकलकर दिल से आ पहुँचे है सब अरमान आंखों में

मिलायें जो नज़र, बातिल परस्तों में कहाँ हिम्मत
है रखता वह चमक हर साहिबे ईमान आंखों में

सना लिक्खी है 'रहबर' जिसमें सरकारे दोआलम की
है जी में आता रख लूँ आयते क़ुरआन आंखों में

नाते पाक

अल्लामा रहबर अदीबी मकनपुरी

नामे अहमद जो लिया आई दहन से खुशबू
जब दरूद उन पे पढ़ा निकली बदन से खुशबू

चूमी दहलीज़ जो आक़ा की तसव्वुर में कभी
फूटी माथे से किरन और किरन से खुशबू

मरते दम लब पे रहा नामे मुहम्मद जिसके
आयेगी हश्र तलक उसके कफ़न से खुशबू

शबे मेराज पड़े सिदरा पे आक़ा के क़दम
क्या अजब बरसे अगर चरख़े कुहन से खुशबू

दिल में हो यादे नबी ज़िक्र ब लब आयेगी
तेरी सांसों से ज़बाँ से तेरे तन से खुशबू

लग गई उनको भी क्या गेसूए अहमद की हवा
आती जो गुल से है हर एक चमन की खुशबू

नात गोई की जो 'रहबर' हुई तौफ़ीक़ अता
फूट निकली है मेरे शेरो सुख़न से खुशबू

नाते पाक

अल्लामा ज़हीरुल मुनइम बब्बन मियां नैयर मकनपुरी

यारब मेरी तकमीले इबादत नहीं होगी
जो गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत नहीं होगी

कुछ और ही होगा वह मगर दिल नहीं होगा
जिस दिल में मुहम्मद की मुहब्बत नहीं होगी

मिल जाए मुक़द्दर से जिसे दश्ते मदीना
फिर उसको कभी ख़्वाहिशे जन्नत नहीं होगी

जब तक यह गुलामाने मुहम्मद हैं ज़मीं पर
बरपा कभी दुनिया में क़यामत नहीं होगी

इंसान हो या जिन हो या हूरो मलक हों
किस पर मेरे आक़ा की हुकूमत नहीं होगी

ऐ दोस्त यह दर्दे ग़मे इश्के नबवी है
कौनेन भी इस दर्द की क़ीमत नहीं होगी

ज़र्राते मदीना मुझ मिल जायें तो 'नैयर'
फिर देखूं कि रोशन मेरी क़िस्मत नहीं होगी

नाते पाक

अल्लामा सैयद राकिम मकनपुरी

लब खोले हर कली है दयारे हुज़ूरे में
कहती नबी नबी है दयारे हुज़ूर में

दोनों जहां की रहमतें ख़ज़रा पे हैं निसार
किस चीज़ की कमी है दयारे हुज़ूर में

सरकार अपने दर पे बुला लें कभी हमें
बस आरज़ू यही है दयारे हुज़ूर में

दामन पसारे हाज़िरे दर हैं मलाइका
ख़ैरात बट रही है दयारे हुज़ूर में

पहुँचा है जो भी गुम्बदे ख़ज़रा की छांव में
वह शख़्स जन्नती है दयारे हुज़ूर में

दामाने अफ़्व में मेरे आका छुपायेंगे
कहता हर उम्मती है दयारे हुज़ूर में

'राकिम' को क्या सतायेंगे दुनिया के हादसात
उसका हिमायती है दयारे हुज़ूर में

नाते पाक

मुहम्मद अजमल मकनपुरी

यह ख़्वाबे मोतबर है और मैं हूँ
मदीने का सफ़र है और मैं हूँ

कभी उम्मीद बर आयेगी मेरी
अभी तो चश्मे तर है और मैं हूँ

कभी महसूस यह होता है मुझको
दरे ख़ैरूल बशर है और मैं हूँ

मेरा दिल मरकज़े यादे नबी है
उजालों का नगर है और मैं हूँ

मैं उड़कर ही पहुँच जाता मदीना
तने बे बालो पर है और मैं हूँ

क़दम किस तरह रक्खूँ इस ज़मीं पर
नबी की रहगुजर है और मैं हूँ

न क्यों मंज़िल क़दम चूमेगी 'अजमल'
जो आक़ा राहबर है और मैं हूँ

नाते पाक

मुहम्मद नसरुद्दीन ख़ाँ वाकिफ़ निश्तौली कन्नौज

इलाही तौफ़ीक़े नात दे दे, नबी की नातें कहा करूँ मैं
यह आरज़ू है कि मुस्तफ़ा की हमेशा मदहो सना करूँ मैं

बिलालो सलमानो ज़ैद जैसा बनादे दिल मेरा मेरे मालिक
कि ज़िन्दगी के हर एक पल में नबी से उलफ़त किया करूँ मैं

सदा वज़ीफ़ा रहे यह अपना रहे यही शुग़्ल ज़िन्दगी का
नबी की नातें पढ़ा करूँ मैं नबी की नातें सुना करूँ मैं

न पास इल्मो अमल है अपने, न है सलीक़ा मुहब्बतों का
गुलामिए मुस्तफ़ा का कैसे बताइये हक अदा करूँ मैं

यही तमन्ना है मेरे दिल में, यही बस आंखों की आरज़ू है
ज़ियारते मुस्तफ़ा ही माँगू खुदा से जब भी दुआ करूँ मैं

चले है जब कारवाँ मदीना, तो ग़म से फटता है मेरा सीना
बता ऐ बादे सबा तू मुझको कि ऐसे आलम में क्या करूँ मैं

हो पूरी दिल की मेरे तमन्ना कि देखूं आक़ा का मैं भी रौज़ा
दयारे तैबा पहुँच के 'वाकिफ़' यह जान अपनी फ़िदा करूँ मैं

नाते पाक

अल्लामा सैयद वफ़ा मकनपुरी

सरकारे दोआलम का जो चाहने वाला है
दुनियाए मुहब्बत में वह अफ़ज़लो आला है

कर डालीं फ़ना जिसने तारीकियां बातिल की
उस शमए रिसालत का दुनिया में उजाला है

जब कोई न था उसका बेदर्द ज़माने में
गिरते हुए इंसाँ को आक़ा ने सम्भाला है

सरकार तो हैं अपने मालिक की हिफ़ाज़त में
कहने को तना लोगो मकड़ी का वह जाला है

कर देता निछावर है जाँ इश्क़े मुहम्मद में
सरकार का हर आशिक़ किस दरजा जियाला है

रोशन है 'वफ़ा' उसकी हसती का दिया जिसने
किरदार को आक़ा के किरदार में ढाला है

हर जानिब ताबानी है नूरानी नूरानी है
सरवरे आलम आपका रोज़ा दुनिया में लासानी है

वक़्त की भी रफ़्तार रूकी है आलम आलम हैरां है
सिदरा से आगे सरवरे आलम की होती मेहमानी है

कौन करेगा चाँद को टुकड़े सूरज कौन उगायेगा
अपना जैसा नूर को कहकर क्यों करता नादानी है

चारों सम्त से बरसे पत्थर और ज़बाँ पर सिर्फ़ दुआ
तायफ़ की धरती पर आक़ा आपकी यह क़ुर्बानी है

जिसके हाथ में अरबो अजम हों उसके पेट पे ये पत्थर
आलम को कौनेन की दौलत यह इस्लाम का बानी है

तूल किया सरकार ने सजदा यह हसनैन की अज़मत है
कैसे उठादें सर सजदे से यह मन्शा यज़दानी है

यह है तमन्ना अपनी 'साहिल' वादिए तैबा में जाकर
सरवरे आलम आपके दर की काश मिले दरबानी है

साहिल मकनपुरी

नाते पाक

आक़ा के उम्मती हैं रूतबा ये कम नहीं है
दोज़ख़ हमें जलादे उसमें यह दम नहीं है

है रहमते नबी से शादाब बाग़े आलम
यह किसने कह दिया कि सब पर करम नहीं है

तुममें अनानियत क्यों ऐ रहबराने मन्सब
यह तो मेरे नबी का नक़्शे क़दम नहीं है

महशर में वह हिसारे रहमत से दूर होगा
जिस दिल में एहतेराम शाहे उमम नहीं है

हैं आशिक़ों की जन्नत शहरे नबी की गलियां
शहरे नबी से प्यारा बाग़े इरम नहीं है

है जज़्बए हुसैनी से रूह में उजाला
यह कारवाने हसती लुट जाये ग़म नहीं है

मस्जिद वहीं बनेगी एक दिन ज़माना सुन ले
यह किसने कह दिया कि मोमिन में दम नहीं है

सोचा कभी दुआ में अब क्यों असर नहीं है
इस दौर का मुसलमाँ साबित क़दम नहीं है

ऐ 'सरफ़राज़' तुमको मिली उनसे सरफ़राज़ी
सरकार का करम है इज़्ज़त भी कम नहीं है

सैयद सरफ़राज़ अली सकनपुरी

नाते पाक

सूफ़ी शफ़ीउल हसन नाज़िश मकनपुरी

यह तो ख़ुदा ही जाने कि सरकार क्या हैं आप
हम तो यह जानते हैं कि बादे ख़ुदा हैं आप

अक़्लो शऊर से बख़ुदा मावरा हैं आप
सरकार सर से पांव तलक मोजज़ा हैं आप

सर ता क़दम यह माना कि हैं ग़रक़े मासियत
हमको यह नाज़ है कि शफ़ीउल वरा हैं आप

उटंठे तो और ज़ाके पड़े किस पे फिर नज़र
आलम के ज़र्रे ज़र्रे से जब रूनुमा हैं आप

ज़ाहिद में और मुझमें बड़ा फ़र्क़ है हुज़ूर
वह ख़ुल्द का फ़िदाई मेरा मुद्दआ हैं आप

माना कि पड़ रहे हैं भँवर बहरे ज़ीस्त में
क्यों ग़र्क़ हो सफ़ीना मेरा नाख़ुदा हैं आप

'नाज़िश' बरोज़े हश्र वही काम आयेगा
दुनिया में जिस रसूल के मिदहत सरा हैं आप

नाते पाक

उम्दतुल मुहक़्क़िक़ीन अल्लामा सैयद मुनव्वर अली मकनपुरी

ता अबद हों रहमतें यारब रसूले पाक पर ।
बाइसे तख़लीके आलम साहिबे लौलाक पर ।।
है अबस फ़ख़्रो तकब्बुर दौलतो इमलाक पर ।
फ़ख़्र करना चाहिए शहरे नबी की ख़ाक पर ।।
रिफ़अते शाने मुहम्मद का जिसे इरफ़ान हो ।
फिर भला क्या उसको हैरत रिफ़अते अफ़लाक पर ।।
ऐ जुनूने इश्क़े अहमद मरहबा सद मरहबा ।
अक़्ल है कुर्बान तेरे हर गिरेबाँ चाक पर ।।
रहम का इंसाफ़ का सरकार लाये हैं पयाम ।
पड़ न जाए ख़ाक फिर क्यों जुल्म की हर धाक पर ।।
घात में थे यूँ तो आदाए नबी हिजरत की शब ।
पड़ गई थी ख़ाक लेकिन हर सरे शब्बाक पर ।।
बद्र में फेंकीं जो कंकरियां मेरे सरकार ने ।
बिजलियां बनकर गिरीं वह लश्करे सफ़्फ़ाक पर ।।
कहता है ख़ैरूल बशर को जो भी अपना सा बशर ।
पड़ गये पत्थर हैं उसकी अक़्ल पर इदराक पर ।।
जो ग़मे इश्क़े मुहम्मद में 'मुनव्वर' तर हुआ
हर खुशी कुर्बान है उस दीदए नमनाक पर

नाते पाक

सैयद शबीहुल मुराद मकनपुरी

है लोगो यही अर्शे आज़म का ज़ीना मदीना मदीना मदीना मदीना
जो इसको न देखे तो बेकार जीना मदीना मदीना मदीना मदीना

अजब वह बिलाले हबश की अज़ाँ थी
चमन में पपीहे की जैसे फुगाँ थी
खुशी से भरा था हर एक गुल का सीना मदीना मदीना मदीना मदीना

यह फिर क्यों न हो अर्शे आज़म से बेहतर
मदीने की मिट्टी मुनव्वर मुनव्वर
है इसमें मिला मुस्तफ़ा का पसीना मदीना मदीना मदीना मदीना

खुदा ने वह बसती मुहब्बत से भर दी
वहाँ शम्स को भी है शक्ले कमर दी
वहाँ शम्स है जैसे रोशन नगीना मदीना मदीना मदीना मदीना

यहीं पर पले हम शबीहे पयम्बर
मुकाम इस जगह का है अल्लाहु अकबर
तिलावत यहीं पर थी करती सकीना मदीना मदीना मदीना मदीना

नाते पाक

अलहाज सैयद वासिफ़ हुसैन मकनपुरी

हमारा भी मुक़द्दर जगमगा दो या रसूलल्लाह
वह ख़ज़रा का हसीं मंज़र दिखादो या रसूलल्लाह

मेरी दुनिया में हर जानिब अंधेरा ही अंधेरा है
कभी ख़्वाबों में आकर मुस्कुरा दो या रसूलल्लाह

जो अपने जैसा कहते हैं बशर तुमको मेरे आक़ा
उन्हें मेराज का क़िस्सा सुना दो या रसूलल्लाह

बक़ीए पाक के ज़र्रों को जो सूरज बनाये है
हमें ज़हरा का वह मदफ़न दिखादो या रसूलल्लाह

मदीना और मक्का ही के बस चक्कर लगाऊँ मैं
उन्हीं गलियों का बस राही बनादो या रसूलल्लाह

शुआएं जिससे फूटें आपके इश्क़ो मुहब्बत की
मेरे दिल में वही शमआ जलादो या रसूलल्लाह

वह जिस मिट्टी को हासिल निस्बतें हैं आपके दर की
उसी मिट्टी में 'वासिफ़' को मिला दो या रसूलल्लाह

नाते पाक

हकीम सैयद इक़रार हुसैन लालन मकनपुरी

गुलशने तैबा से जब बादे सबा आती है
यादे महबूबे खुदा दिल मेरा बरमाती है

वह रूख़े पाके मुहम्मद की ज़िया है जिससे
महो खुर्शीद की तनवीर भी शरमाती है

जब फ़ुज़ूँ होती है बेताबिए इश्के अहमद
मेरी नाकाम तमन्ना मुझे समझाती है

ऐ ग़मे दूरिए तैबा तेरा मशकूर हूँ मैं
रात तेरे ही सहारे में गुजर जाती है

तुझपे सरकार तरस खाके ज़रूर आयेंगे
दिल को उम्मीद शबोरोज़ यह समझाती है

देखकर तशनगिए बादा कशाये अहमद
सम्ते तैबा से घटा आके बरस जाती है

अर्ज़ सरकार से कर देना सलामे 'इक़रार'
तू तो ऐ बादे सबा रोज़ वहाँ जाती है

सैयद रेहान अहमद शरर मकनपुरी

मदहे शाहे उमम क्या करें
क्या कहें और रक़म क्या करें

जो सना ख़ुद हो उसकी सना
हम सुपुर्दे क़लम क्या करें

चल दिये सूए तैबा तो फिर
अब ग़मे पेचो ख़म क्या करें

ख़ाकसाराने कूए नबी
लेके बाग़े इरम क्या करें

मस्ते मयख़ानए मुस्तफ़ा
हसरते जामे जम क्या करें

जिसमें दीदारे तैबा न हो
उस मुक़द्दर को हम क्या करें

ख़ाके तैबा में मिल के 'शरर'
अपने मिटने का ग़म क्या करें

नाते पाक

सैयद ज़ियाउल अनवार मकनपुरी

जामे इश्के नबी जब छलकने लगा
शोलए तशनाकामी भड़कने लगा

जब मदीने की जानिब चला है कोई
सोज़े हिजरे नबी सर पटकने लगा

आई तैबा से है जब नसीमे सहर
आरज़ूओं का चेहरा दमकने लगा

जब नुबूवत का सूरज तुलूअ हो गया
ज़र्रा ज़र्रा जहाँ का दमकने लगा

लब कुशा यूँ हुए सरवरे अम्बिया
जैसे अलफ़ाज़ से रस टपकने लगा

रहबरी फिर से सरकार फ़रमाइये
राहे मंज़िल से इंसाँ भटकने लगा

ऐ 'ज़िया' तूने छेड़ा जो ज़िक्रे नबी
हर मुनाफ़िक़ के दिल में खटकने लगा

सलाम

अल्लामा सैयद वली शिकोह मकनपुरी

अस्सलातो वस्सलाम ऐ सरवरे दुनिया ओ दीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ मरकज़े हुस्ने यक़ीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ ताजदारे मुरसलीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं

भेजता ख़ालिक़ है खुद शहकार पर अपने सलाम
हम न फिर कैसे पढ़ें सरकार पर अपने सलाम
अर्ज़ करते हैं दरे अक़दस पे जिब्रीले अमीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं

हिज्र में बेचारगी के ग़म से घबराता है दिल
जब मदीना याद आता है तड़प जाता है दिल
दीजिए इज़्ने हुज़ूरी सब्ज़ गुम्बद के मकीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं

दर्द मन्दों ग़म नसीबों का सहारा आप हैं
डूबते दिल का तलातुम में सहारा आप हैं
आप ही हैं दिल शिकस्ता ख़स्ताहालों के मुईं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं

आप हैं ख़ैरे मुकम्मल आप फ़ख़्रे अम्बिया
आप ही आकाए कुल हैं ऐ हबीबे किब्रिया
आलमे ख़िलक़त में कोई आपका सानी नहीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं

है 'वली'ए ज़ार मौला आपके दर का गदा
नेमते अनवारे इरफ़ाँ कीजिए उसको अता
मम्बए फ़ैज़े रिसालत मसदरे नूरे मुबीं
अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल लिल आलमीं
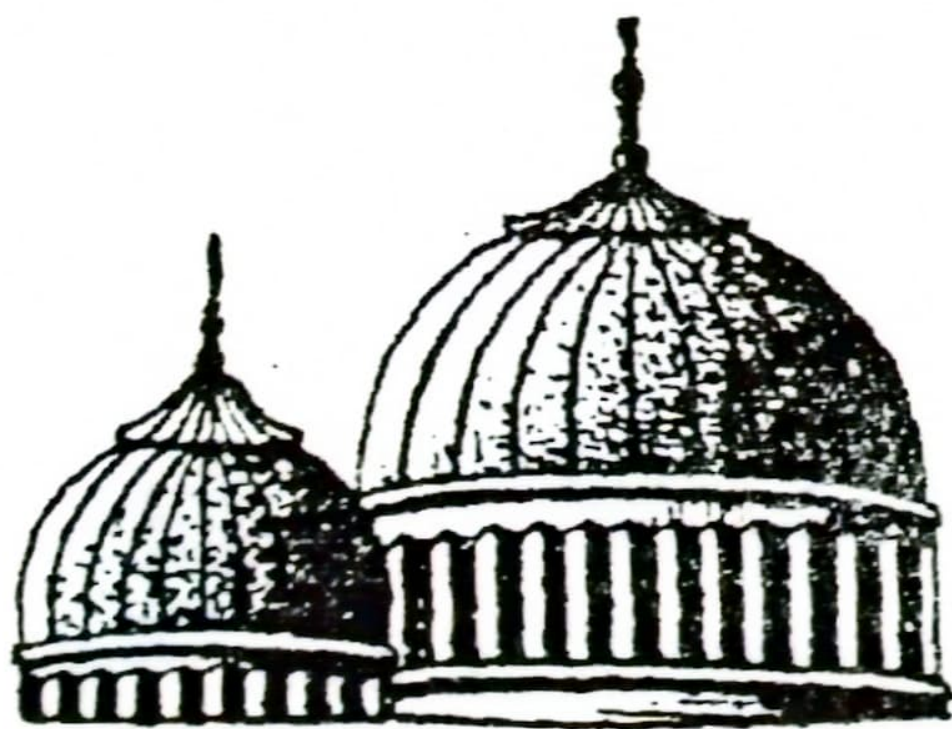
मनक़बत हज़रत अली

क्यों न मिट जाए फिर कुफ़्र की तीरगी या अली या अली या अली या अली।
आप शमए रिसालत की हैं रोशनी या अली या अली या अली या अली।।
आपने जब रखा इस ज़मीं पर क़दम थरथराने लगे ज़ुल्मो जौरो सितम।
आलमे कुफ़्र में पड़ गई खलबली या अली या अली या अली या अली।।
शाहकारे विला इफ़्ख़ारे अरब अहलेबैते नबी हाशमीउन्नसब।
अल्लाह अल्लाह क्या शान है आपकी या अली या अली या अली या अली।।
मुश्किलें पल में बन जाती हैं राहतें और बरसती हैं अल्लाह की रहमतें।
हम लगाते हैं जब नारए हैदरी या अली या अली या अली या अली।।
मिल गया जब तुम्हें बिस्तरे मुस्तफ़ा सो गये मुतमइन होके तुम ऐ शहा।
नींद आई न तुमको थी ऐसी कभी या अली या अली या अली या अली।।
दर से ख़ाली न सायल को जाने दिया रह्न बच्चों को रखकर भला कर दिया।
कौन है आप जैसा जहाँ में सख़ी या अली या अली या अली या अली।।
आप ही से खुले इल्मो हिक्मत के दर है रहीने करम आपका हर बशर।
आप दरवाज़ए शहरे इल्मे नबी या अली या अली या अली या अली।।
कैसे होती नमाज़ आपकी फिर क़ज़ा डूबा सूरज भी आक़ा ने पलटा दिया।
बूँद आंसू की जिस दम है रुख़ पर गिरी या अली या अली या अली या अली।।
तूने पल में उखाड़ा है ख़ैबर का दर और कुचला हमेशा है बातिल का सर।
तेरे बाज़ू में ताक़त है अल्लाह की या अली या अली या अली या अली।।
पाना है जो मुसीबत से तुझको मफ़र नाम मौला का लिख तख़्तिए क़ल्ब पर।
लब पे जारी रहे 'सोज़' हर दम यही या अली या अली या अली या अली।।

सैयद क़मर आदिल सोज़ मकनपुरी

नौहा

अल्लामा अदीब मकनपुरी

करते हैं सब ज़िक्रे हुसैनी प्यार से घर घर गली गली
नामे यज़ीदी की रूसवाई आज भी दर दर गली गली

लेके अलम अब्बास का बच्चे कूचा कूचा फिरते हैं
फ़ौजे यज़ीदी कहीं नहीं है अली का लश्कर गली गली

क्यों तूने महफ़ूज न रखे उन सब के क़दमों के निशाँ
शहरे कूफ़ा तुझे में भरी है आले पयम्बर गली गली

नहरे फ़ुरात एक बूँद भी पानी जिन प्यासों को दे न सके
अब है छलकता नाम पे उनके जामे कौसर गली गली

बैअते फ़ासिक से बेहतर है सर कटवा देना लोगो
मेरा ये पैग़ाम सुनाना तैबा जाकर गली गली

आले नबी को जैसे फिराया तूने दर दर इब्ने साद
ठोकरें खिलवायेगा यूँही तुझको मुक़द्दर गली गली

माहे मुहर्रम लेके आया प्यास के मारों की यादें
आंखों आंखों लहराते हैं ग़म के समन्दर गली गली

बातिल की क़िस्मत में फ़ना है हक़ ज़िन्दा रहता है 'अदीब'
मिट गये सब मद्दाहे यज़ीदी शह के सनागर गली गली

मनक़बत शरीफ़

अल्लामा अदीब मकनपुरी

जमाले हुस्ने मदीना मदार का दर है
शऊरे दीं हो तो काबा मदार का दर है

मेरा जहाने तमन्ना मदार का दर है
मेरी तलब का तक़ाज़ा मदार का दर है

हुसूले इश्के नबी की बुलन्दियों के लिए
जहाँ पे झुकती है दुनिया मदार का दर है

नई हयात जो देता है मुर्दा रूहों को
ज़माने वालो ! वह ज़िन्दा मदार का दर है

करूँ जो दावए दीदारे हक़ तो बेजा क्या
मगर जो देखो तो सादा मदार का दर है

कहीं भी जाइये दिल को सकूँ नहीं मिलता
सुकून बख़्श तो तनहा मदार का दर है

'अदीब' कातिबे तक़दीर ने कहा मुझसे
तेरे नसीब में लिक्खा मदार का दर है

मनक़बत शरीफ़

अल्लामा अदीब मकनपुरी

ग़मे दुनिया न कुछ ख़ौफ़े कयामत की ज़रूरत है
मदारे दोजहाँ से बस मुहब्बत की ज़रूरत है

रसाई बारगाहे मुस्तफा तक चाहने वालो !
दरे कुत्बे जहाँ से सिर्फ निसबत की ज़रूरत है

नहीं लगती है उनको देर अब भी झोलियां भरते
मगर, ऐ ज़ायरो ! हुस्ने अकीदत की ज़रूरत है

यह माना और भी फरयाद रस दुनिया में हैं लेकिन
हमें तो आपकी चश्मे इनायत की ज़रूरत है

सुना है रोज़े महशर आफताब आंखे दिखायेगा
तुम्हारे सायए दामाने रहमत की ज़रूरत है

वही गुस्ताख़ जो मुन्किर हैं फैज़ाने विलायत के
'अदीब' ऐसों से हर हालत में नफरत की ज़रूरत है

मनक़बत शरीफ़

है किताबों में यह तहरीर मदारे आज़म
आप हैं सबसे बड़े पीर मदारे आज़म

आपके हाथ में ऐ शाह निज़ामे हसती
है जहाँ आपकी जागीर मदारे आज़म

उसमें थी सरवरे कौनेन की शफ़कत की मिठास
आपने खाई थी जो खीर मदारे आज़म

आप गर चाहें तो एक आन में बन सकती है
मेरी बिगड़ी हुई तक़दीर मदारे आज़म

जिसको हासिल हो तेरे दर की गुलामी का शरफ
दोनों आलम में है वह मीर मदारे आज़म

आपका रौज़ए पुरनूर हमें लगता है
ख़ानए काबा की तस्वीर मदारे आज़म

मनकबत आपकी 'मिस्बाह' ने जो लिक्खी है
है मुनाफ़िक़ के लिए तीर मदारे आज़म

अल्लामा सैयद मिस्बाहुल मुराद मकनपुरी

क़तअ

मुनक़ता हो जाए फ़ैज़े मुस्तफ़ा यह झूट है
जो कहे है सोख़्त कोई सिलसिला यह झूट है
लोग कहते हैं मदारी दुशमनाने ग़ौस हैं
दोस्तो ! देखो ज़रा कितना बड़ा यह झूट है

अल्लामा मिस्बाहुल मुराद मकनपुरी

मनकबत मदार पाक

अल्लामा मिस्बाहुल मुराद मकनपुरी

सर से पांव तक करामत ही करामत है मदार
ऐसा लगता है कि एजाज़े रिसालत है मदार

हज़रते सिद्दीक का हुस्ने सदाकत है मदार
और उमर फारूक की शाने अदालत है मदार

रूए आली से अयाँ उस्माँ का है रोबे हया
और लिए बाज़ू में हैदर की शुजाअत है मदार

आपको रब ने है बख़शा दरजए महबूबियत
औलिया भी आपके मरहूने मिन्नत है मदार

ऐसा लगता है कि जैसे वक़्त के औरंगज़ेब
वह गदा जो आपके ज़ेरे इनायत है मदार

वाकई महशर के इस तपते हुए मैदान में
हम गुनहगारों की ख़ातिर अब्रे रहमत हैं मदार

नफरतें यह कहके नाकामी पे अपनी रो पड़ीं
वाकई 'मिस्बाह' से करते मुहब्बत है मदार

मनक़बत शरीफ़

सैयद क़मर आदिल सोज़ मकनपुरी

रहमते कौनेन का जिसको घराना चाहिए
उसको कुत्बे दोजहाँ के दर पे आना चाहिए

आपकी तौसीफ लिखने के लिए कुत्बुल मदार
काविशे अहले कलम को एक ज़माना चाहिए

औलियाए हक यह कहते हैं कि हर एक सिलसिला
निस्बते कुत्बे दोआलम से सजाना चाहिए

इस दयारे पाक में है हर तरफ़ नूरे वफ़ा
हर कुदूरत को यहाँ दिल से मिटाना चाहिए

आए जब कुत्बे दोआलम, दी मनादी ने निदा
साकिनाने हिन्द तुमको मुस्कुराना चाहिए

एक इशारे में बदल देते हैं तकदीरें मदार
'सोज़' तुझको भी मुकद्दर आज़माना चाहिए

मनक़बत शरीफ़

अल्लामा शोहरत अदीब मकनपुरी

महकी हुई फ़ज़ा है दयारे मदार में
खुशबूए मुस्तफा है दयारे मदार में

सैराब कर रहा है जो हर तशनाकाम को
दरया वह बह रहा है दयारे मदार में

होता गुमाँ है तैबा की सुब्हे हसीन का
वह नूर वह ज़िया है दयारे मदार में

मुन्किर मुनाफ़कत का जो तुझको लगा है रोग
उसकी फकत दवा है दयारे मदार में

आए हैं उस्तवारिए निस्बत को औलिया
मेला सा एक लगा है दयारे मदार में

मुन्किर को भी निगाहे बसीरत नसीब हो
'शोहरत' यही दुआ है दयारे मदार में

मनक़बत शरीफ़

शेख़ुल हिन्द सैयदना जुलफ़िक़ार अली क़मर मकनपुरी

आता जो अश्कबार है शहरे मदार में
मिलता उसे करार है शहरे मदार में

बस एक ही पुकार है शहरे मदार में
हर लब पे दम मदार है शहरे मदार में

दुनिया ने अपने दर से हो ठुकरा दिया जिसे
उसको मिला वक़ार है शहरे मदार में

रखना किसी वली से न दिल में मुनाफ़कत
यह बात नागवार है शहरे मदार में

इरफ़ानो आगही का जिसे भी शऊर है
आता वह बार बार है शहरे मदार में

जिसको न हो यक़ीं वह 'क़मर' आके देख ले
मिलता नबी का प्यार है शहरे मदार में

मनक़बत शरीफ़

अल्लामा हकीम सैयद वली शिकोह मकनपुरी

तेरा इख़्तियारो मन्सब कोई जानता नहीं है
तू मदारे हर दोआलम तेरे हाथ क्या नहीं है

तेरा उम्र भर का रोज़ा यह बता रहा है हमको
तेरे मिस्ल औलिया में कोई दूसरा नहीं है

तू नवाज़िशों की बारिश तू अताओं का समन्दर
जिसे जो भी चाहे दे दे तेरे पास क्या नहीं है

जिसे नाखुदाई हासिल हो तेरी मदारे आलम
वह सफ़ीना बहरे ग़म में कभी डूबता नहीं है

मेरे जैसों पर भी आक़ा तेरी बेपनाह शफ़कत
तेरी बन्दा परवरी की कोई इन्तहा नहीं है

मैं कभी भी कुछ न कहता मैं उलझ गया हूँ आक़ा
बजुज आपकी तवज्जो कोई रास्ता नहीं है

तेरे दर पे हम हैं हाज़िर यह यकीन लेके आक़ा
तेरे दर से कोई ख़ाली कभी लौटता नहीं है

है अज़ल से मेरा हिस्सा 'वली' उनकी बख़्शिशों में
सिवा उनके मेरा अपना कोई दूसरा नहीं है

मनक़बत शरीफ़

अलहाज अल्लामा ज़हीरुल मुनइम बब्बन मियां मकनपुरी

निगाहे शौक़ ज़रा होशियार आज की रात
नक़ाब उलटेंगे क़ुत्बुल मदार आज की रात

हुज़ूर देखिये कब जलवाबार होते हैं
निगाह को है यही इन्तिज़ार आज की रात

कलस पे देखके नूरे मुहम्मदी की बहार
किये फ़लक ने सितारे निसार आज की रात

तजल्लियों पे नहीं अब कोई हिजाब की क़ैद
है राज़े नूरे अज़ल आशकार आज की रात

उम्मीदवारे करम को तलाश करती है
निगाहे रहमते परवरदिगार आज की रात

यह ख़ाके अरज़े मकनपुर का तसर्रुफ़ है
कि अर्श पर हैं रसाँ ख़ाकसार आज की रात

बना है महबते अनवारे हुस्न ऐ नैयर !
हर एक ज़र्रए क़ुत्बुल मदार आज की रात

मनक़बत शरीफ़

मुहम्मद नौशाद ख़ान शाद करोली क़न्नौज

मदारे पाक का जो भी गुलाम होता है
वह अपने वक़्त का लोगो इमाम होता है

वहाँ बरसती है दिन रात रहमतों की घटा
तुम्हारा ज़िक्र जहाँ सुब्हो शाम होता है

भँवर में कशती है आक़ा लगे किनारे पर
सुना है तेरे इशारे से काम होता है

है लिक्खी जिसके मुक़द्दर में तशनगी तेरी
उसे नसीब हक़ीक़त का जाम होता है

तुम्हारा ग़म जिसे मिल जाए मेरे क़ुत्बे जहाँ
हर एक मोड़ पे वह शादकाम होता है

मनक़बत शरीफ़

करते तवाफ़े शैख़ हैं ज़िन्दा मदार का
अक्से जमाले काबा है जलवा मदार का

अल्लाह रे यह शान यह रूतबा मदार का
हर शख़्स पढ़ रहा है क़सीदा मदार का

क़दमों पे उसके झुकते हैं ताजे शहंशही
जिसके गले में पड़ गया पट्टा मदार का

मैला पुराना कर न सकें जिसको गर्दिशें
वह जन्नती लिबास है जामा मदार का

पाकीज़गी का उनकी है शाहिद कलामे हक़
सादात वह जो खाते हैं सदक़ा मदार का

सूरज मुसीबतों का हमें क्या डरायेगा
सर पर हमारे रहता है साया मदार का

'वाकिफ़' से क्या बयान हो मिदहत मदार की
ऊँचा बहुत मुकाम है ज़िन्दा मदार का

मुहम्मद नसरुद्दीन ख़ाँ वाकिफ़ निस्तौली कन्नौज

मनक़बत शरीफ़

अल्लामा सैयद वफ़ा मकनपुरी

जिस तरफ़ देखिये नूर ही नूर है
मिस्ले तैबा यह अर्ज़े मकनपुर है

वह हिदायत की मंज़िल नहीं पा सका
जो मदारे जहाँ से रहा दूर है

क्या डरायेंगे हमको यह अहले सितम
जब करम हम पे आक़ा का भरपूर है

क्या करें नज़्रे शाहे मदारे जहाँ
बस मेरे पास एक क़ल्बे रंजूर है

जो सवाली भी आया न ख़ाली गया
उनके दर का निराला यह दस्तूर है

सब करम आपका है मदारे जहाँ
यह जो इशक़े नबी में 'वफ़ा' चूर है

मनक़बत शरीफ़

सैयद ज़ियाउल अनवार मकनपूरी

ज़माना ख़फ़ा है मदारे दोआलम
तेरा आसरा है मदारे दोआलम

नहीं मेरी कश्ती को ख़ौफ़े हवादिस
मेरा नाखुदा है मदारे दोआलम

तुम्हीं पर निछावर करूँ ज़िन्दगानी
मेरा मुद्दआ है मदारे दोआलम

हो दुनिया कि उकबा तसहुक में तेरे
सभी कुछ मिला है मदारे दोआलम

सभी सिलसिले फ़ैज़ पाते हैं जिससे
तेरा सिलसिला है मदारे दोआलम

हो महशर में हाथों में दामन तुम्हारा
यही इल्तिजा है मदारे दोआलम

ज़माने के वलियों में आला व अफ़ज़ल
तेरा मर्तबा है मदारे दोआलम

हरम और ख़ज़रा के जलवों का मरकज़
यह रोज़ा तेरा है मदारे दोआलम

'ज़िया' पर भी हो एक निगाहे इनायत
गुलाम आपका है मदारे दोआलम

मनक़बत शरीफ़

साहबज़ादा सैयद ज़फ़र मुजीब मकनपुरी

लब पे जब नाम मदारे दोजहाँ आया है ।
उलझनें दूर हुई दिल ने सुकूँ पाया है ।।
चूमते प्यार से हैं उसके कदम अहले ख़िरद ।
मेरे सरकार का दीवाना जो कहलाता है ।।
देखते हैं जो अक़ीदत से तेरे रोज़े को ।
मन्ज़रे काबा-ओ-ख़ज़रा उन्हें दिखलाया है ।।
यह हक़ीक़त है कि भारत के हर एक गोशे में ।
दीने इस्लाम फकत आपने फैलाया है ।।
अच्छी लगती नहीं आराइशे दुनिया मुझको ।
इस क़दर आपका दरबार मुझे भाया है ।।
वह गया फूल तबस्सुम के लिए होटों पर ।
जो भी रोता हुआ चौखट पे तेरे आया है ।।
तेरी रहमत ने दिया बढ़ के सहारा आक़ा ।
जब भी मजबूर पे दुनिया ने सितम ढाया है ।
ऐ 'मुजीब' उसका न उतरा खुमारे इश्क़ कभी ।
एक पैमानए मदार जिसने पाया है ।।

मदार बुक डिपो

की मतबूआ किताबें

हमारे यहाँ हर किस्म की दीनी, दरसी, इस्लामी किताबें मुनासिब कीमत पर दस्तयाब हैं। साथ ही "मदारे [illegible]" "जमाले कुत्बुल मदार", "फ़ैज़ाने [illegible] आलीमीन", "हक़ीक़ते मदारुल [illegible]मीन", "गुलिस्ताने मदार", "निकहते मदार", "शाह मदार", "फ़ैज़ाने सिलसिलाए मदार" नात व मनक़िब की ताज़ा और नई किताब "दायरे हुज़ूर में" और माहनामा कुत्बुल मदार" दस्तयाब हैं राब्ता फ़रमाकर शुक्रिया का मौक़ा दें।

मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इस्माईल [illegible] मदारी

मकनपुर शरीफ़, ज़िला कानपुर नगर - 209202 (यू०पी०)

मोबाइल नं० - 9793347086